पीठासीन अधिकारियों के 81वें अखिल भारतीय वर्चुअल सम्मेलन (AIPOC) में माननीय अध्यक्ष के उपयोग हेतु भाषण।

———

माननीय पीठासीन अधिकारीगण,

- आज अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस पर आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं।
- आज का दिन हमारे लिए संकल्प का दिन है कि हम अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं को सशक्त और मजबूत बनाएं तथा जनता के प्रति जवाबदेह बनाएं ताकि इन संस्थाओं के माध्यम से जनता का कल्याण सुनिश्चित हो सके।
- आज इस अवसर पर विश्व के कई देशों की संसदों के अध्यक्ष भी वर्चुअल रूप से हम सबसे जुडे हैं, मैं आप सभी का अभिनंदन करता हूँ।
- आप सब भी आज लोकतंत्र दिवस पर अपने-अपने अनुभवों और विचारों को साझा करेंगे ताकि हम सब मिलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकतंत्र को सशक्त और मजबूत बनाने में अपनी प्रमुख भूमिका निभा सकें।
- आज पूरे विश्व में लोकतंत्र को ही शासन चलाने की सर्वोत्तम पद्धति माना गया है। अभी कुछ दिनों पहले ही हम वियना में विश्व के संसदों की अध्यक्षों के पांचवें सम्मेलन में मिले थे। वहां हमने कुछ प्रस्ताव और संकल्प पारित किए थे और अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया था।
- मेरा विचार है कि उन विचारों और अनुभवों के माध्यम से अब हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं व प्रणालियों एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने का प्रयास करना होगा।
- हमने वैश्विक मंचों से जुडकर संपूर्ण विश्व में लोकतांत्रिक मूल्यों के पोषण, संरक्षण और संवर्धन के लिए अग्रणी भूमिका निभाने का संकल्प लिया है।
- मुझे आशा है कि उन संकल्पों एवं प्रतिबद्धताओं को पूर्ण करने की दिशा में विश्व के सभी देशों की संसदों द्वारा साझा प्रयास किए जाएंगे।

अब मैं इस कार्यक्रम से जुडे विभिन्न देशों की संसदों के पीठासीन अधिकारियों से निवेदन करता हूँ कि वे एक-एक कर अपने विचार प्रस्तुत करें।

विश्व की संसदों के माननीय पीठासीन अधिकारीगण,

अब हम भारत के पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में इस सम्मेलन में चर्चा आरंभ करने जा रहे हैं। यदि आप चाहें तो इस कार्यक्रम में भी हिस्सा ले सकते हैं और यदि आप चाहें तो कार्यक्रम से exit भी कर सकते हैं।

इस सम्मेलन से जुडने के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

(भारत के पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन का शताब्दी समारोह का शुभारंभ)

माननीय पीठासीन अधिकारीगण,

- इसी के साथ आज भारत के पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन का शताब्दी वर्ष भी है। इसके लिए भी मैं आप सबको शुभकामनाएं देता हूँ।
- पीठासीन अधिकारियों का पहला सम्मेलन वर्ष 1921 में शिमला में हुआ था। इस सम्मेलन के 100 साल पूरा होने जा रहे हैं, मुझे आशा है कि फिर हम सभी भौतिक रूप से हिमाचल प्रदेश के शिमला में मिलेंगे।
- इन दस दशकों की यात्रा में हमने आजादी भी प्राप्त की और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित अपना संविधान बनाया। संविधान निर्माताओं ने लोगों की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप सबसे उपयुक्त संसदीय लोकतंत्र प्रणाली को अपनाया।
- लोकतंत्र की इस लंबी यात्रा में हमने अपने विचारों और अनुभवों के माध्यम से लोकतंत्र को और मजबूत किया है और लोकतांत्रिक संस्थाओं को पारदर्शी एवं जवाबदेह बनाने के लिए निरंतर प्रयास भी किए हैं।

- पिछले सौ वर्षों के दौरान पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलनों में जो संकल्प और निर्णय लिए गए, अब समय आ गया है कि हम उन संकल्पों और निर्णयों को व्यवहार में लाएं और उनको execute करने की कार्य योजना भी बनाएं।

<u>माननीय पीठासीन अधिकारीगण,</u>

- संसदीय लोकतंत्र की नींव निर्वाचित प्रतिनिधियों की जनता के प्रति जवाबदेही पर टिकी हुई है।
- विधान मंडल लोकतंत्र के ऐसे मंदिर हैं, जिनके माध्यम से हम जनकल्याण के कार्य करने का प्रयास करते हैं।
- सर्वोच्च जनप्रतिनिधि संस्थाएं होने के कारण हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि देश में अन्य संस्थाओं और संगठनों के लिए हम आदर्श संस्थाओं के रूप में कार्य करें तथा कार्य, अनुशासन और शालीनता के उच्चतम मापदंडों को बनाए रखें।
- किसी विधान मंडल की विश्वसनीयता उसके सदस्यों की भूमिका और आचरण से जुड़ी होती है। जनप्रतिनिधि होने के नाते उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे विधान मंडल के अंदर और बाहर शालीनता के उच्चतम मानदंडों का पालन करें। दुर्भाग्य से, हाल के वर्षों में हमने देखा है कि जनप्रतिनिधियों के अशोभनीय व्यवहार की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं, जिससे इन संस्थाओं की छवि धूमिल होती जा रही है।
- पीठासीन अधिकारी होने के नाते हमारी जिम्मेदारी है कि हमारे जनप्रतिनिधियों के व्यक्तिगत और सामूहिक आचरण के मापदंडों को उच्च बनाने के लिए हम किस प्रकार की कार्य योजना बना सकते हैं।
- इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारी लोकतांत्रिक संस्था हमारे संविधान में परिकल्पित व्यवस्था के अनुरूप अपना कार्य करने में सक्षम हो।

माननीय पीठासीन अधिकारीगण,

- पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन के शताब्दी वर्ष और आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में मेरे मन में कुछ कार्यक्रमों के आयोजन के बारे में कुछ विचार हैं जिन्हें मैं आपके साथ साझा कर रहा हूँ। इनके संबंध में आपके जो विचार और सुझाव हैं, जब हम शिमला में शताब्दी सम्मेलन में मिलेंगे, तब उन विचारों और सुझावों पर चर्चा करेंगे और उन्हें अंतिम रूप देंगे।

1. हमने पिछले 100 वर्षों के अंदर पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में जो निर्णय लिए गए हैं, जो संकल्प लिए गए हैं, उन निर्णयों पर विचार करेंगे और उनके क्रियान्वयन पर चर्चा करेंगे।

2. आज देश के अंदर संसद और विधान मंडलों में अनुशासन और शालीनता के विषय पर हमें गंभीरता से विचार करना होगा। पहले भी इस विषय पर वर्ष 1992, 1997 और 2001 में सम्मेलन आयोजित किए गए थे। इन सम्मेलनों में पीठासीन अधिकारियों के अलावा राज्यों के मुख्यमंत्रियों, संसदीय कार्य मंत्रियों, प्रतिपक्ष के नेता, राजनीतिक दलों के नेतागण और सचेतकों ने भी हिस्सा लिया था। उसमें कुछ विचार और संकल्प लिए गए थे।

क्यों नहीं हम 21 साल बाद वर्ष 2022 में फिर से बैठकर ''लोकतांत्रिक संस्थाओं में अनुशासन और शालीनता'' विषय पर कुछ सामूहिक निर्णय लें और फैसलें करें।

3. मेरा विचार है कि आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। मेरा सुझाव है कि देश भर में सांसदों और विधायकों के एक व्यापक और बड़े सम्मेलन का आयोजन हो।

4. आजादी के 75 वर्ष होने पर मैंने विचार किया है कि संसद में 75 वर्ष से ऊपर के वर्तमान एवं भूतपूर्व सांसदों, जिनका दीर्घकालीन संसदीय अनुभव रहा है, का सम्मेलन आयोजित किया जाए ताकि उनके अनुभवों का लाभ हमें मिल सके। इसी तरह से आप भी अपने-अपने राज्यों में 75 वर्ष के ऊपर के सांसदों और विधायकों, चाहे वे वर्तमान हो या पूर्व, जिनका दीर्घ संसदीय अनुभव रहा है, का सम्मेलन आयोजित कर सकते हैं ताकि उनके अनुभवों का लाभ वर्तमान लोगों को मिल सके।

5. संसदीय व्यवस्था में लोक लेखा समिति महत्वपूर्ण समिति होती है जो सम्पूर्ण लेखा पर नियंत्रण करती है और शासन में पारदर्शिता लाती है। यह वर्ष भारत में लोक लेखा समिति की स्थापना का शताब्दी वर्ष है। इस उपलक्ष्य में आगामी 4-5 दिसम्बर, 2021 को लोक लेखा समिति का शताब्दी वर्ष समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। इसमें देश के सभी विधान मंडलों के पीठासीन अधिकारीगण, संसद एवं राज्यों की विधान मंडलों की लोक लेखा समितियों के सभापति, राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के पीठासीन अधिकारियों तथा अन्य गणमान्य अतिथियों को भी आमंत्रित किया जा रहा है। इस सम्मेलन पर भी हमें विचार करना है।

6. ''लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ करने में महिला एवं युवा सांसदों और विधायकों की भूमिका'' विषय पर कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाने पर विचार किया जा सकता है।

7. सभी विधान मंडल अपने-अपने राज्यों में ग्राम पंचायतों और नगरीय निकायों की लोकतांत्रिक संस्थाओं का सम्मेलन आयोजित करे, जिसमें लोकतांत्रिक संस्थाओं के सुदृढीकरण की कार्य योजना पर चर्चा हो।

अभी लोक सभा की PRIDE संस्था ने Democracy के सबसे निचले Pillar ग्राम पंचायतों के सम्मेलन आयोजित किये हैं, जिनके अच्छे परिणाम आये हैं।

मैं इन सभी विषयों पर आपके बहुमूल्य विचार और सुझाव आमंत्रित करता हूँ।

हम सब शीघ्र ही पीठासीन अधिकारियों के शताब्दी वर्ष सम्मेलन में शिमला में मिलेंगे।

माननीय पीठासीन अधिकारीगण,

- आज अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस के अवसर पर तथा अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन के सौ वर्ष पूरा होने के अवसर पर यहां सफल और सार्थक चर्चा हुई है। मैं इस सम्मेलन का समापन एक संकल्प के साथ करना चाहता हूँ।

- आइए, हम इस ऐतिहासिक अवसर पर संकल्प लेते हैं कि हम सब मिलकर भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करेंगे, अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं को आदर्श संस्थाएं बनाएंगे, देश-विदेश में लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए काम करेंगे और हम अपने राजनीतिक लोकतंत्र को आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र में रूपांतरित करेंगे।

- धन्यवाद।